Toppersnotes®
Unleash the topper in you

BPSC

Prelims & Mains

बिहार लोक सेवा आयोग

सामान्य हिन्दी एवं निबंध लेखन

SIERRA INNOVATIONS

BPSC

सामान्य हिन्दी

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	संज्ञा	1
2.	सर्वनाम	6
3.	उपसर्ग	8
4.	प्रत्यय	11
5.	संधि	15
6.	समास	32
7.	विशेषण	41
8.	क्रिया	42
9.	कारक एवं विभक्ति	44
10.	वर्तनी शुद्धि	50
11.	शुद्ध – वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि	53
12.	विलोम – शब्द	64
13.	पर्यायवाची	72
14.	मुहावरे	75
15.	लोकोक्ति	85
16.	वाक्य के लिए एक शब्द	98
17.	निबंध – लेखन	104
18.	संक्षेपण	109
19.	वाक्य विचार	118

निबंध लेखन

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**एक अच्छा निबंध कैसे लिखें एक अवलोकन** • निबंध क्या है? • एक निबंध को क्या नहीं होना चाहिए.... • एक अच्छे निबंध के अवयव	130
2.	**UPSC मुख्य परीक्षा निबंध के विशिष्ट पहलू** • निबंध पेपर पैटर्न • UPSC - निबंध के पेपर में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें? • निबंध लेखन का दृष्टिकोण • विषय चुनने का आधार • निबंध से क्या अपेक्षा की जाती है? • निबंध के विषय का संदर्भ • दार्शनिक निबंध कैसे लिखें	132

3.	**महिला सशक्तिकरण**	**137**
4.	**भारत में शिक्षा**	**141**
5.	• भारत में स्वास्थ्य सेवा	**146**
6.	**भारत में शहरी योजना भारत के भावी शहरों का निर्माण**	**150**
7.	**वैश्वीकरण, इसके निहितार्थ और हाल के रुझान**	**153**
8.	**कृषि**	**156**
9.	• जलवायु परिवर्तन	**160**
10.	**कृत्रिम बुद्धिमता**	**164**
11.	**क्रिप्टोकरेंसी आर्थिक सशक्तिकरण का एक उपकरण या एक नियामक दुःस्वप्न**	**168**
12.	**सोशल मीडिया और उसकी बुराई**	**171**
13.	**भारत में पर्यटन**	**175**
14.	**रक्षा उद्योग का स्वदेशीकरण आयातक से निर्यातक तक** • परिशिष्ट • उद्धरणों का संग्रह ○ व्यक्तिगत रूप से उद्धरणों का संग्रह	**177**

संधि

संधि का अर्थ–मिलान

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे–	वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
	रमा	+	ईश	=	रमेश
	आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ। संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे–	शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
	सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
	निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

- संधि के तीन भेद होते है–
  1. स्वर संधि
  2. व्यंजन संधि
  3. विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि**

   स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

   जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

(i) दीर्घ संधि
(ii) गुण संधि
(iii) वृद्धि संधि
(iv) यण संधि
(v) अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ के बाद वे ही लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

(अ + अ = आ)

1. परमार्थ – परम + अर्थ
   अ + आ = आ
2. कार्य + आलय = कार्यालय
   (आ + अ = आ)
3. परीक्षार्थी = परीक्षा + अर्थी
   (आ + आ = आ)
4. महाशय = महा + आशय
   (इ + इ = ई)
   रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
   (ई + इ = ई)
   शची + इन्द्र = शचीन्द्र
   (इ + ई = ई)
   अभि + ईप्सा = अभीप्सा

इ + ई = ई

(ई	+	ई	= ई)	(उ	+	उ	= ऊ)
नदी	+	ईश	= नदीश	भानु	+	उदय	= भानूदय
(उ	+	ऊ	= ऊ)	(ऊ	+	उ	= ऊ)
लघु	+	ऊर्मि	= लघूर्मि	वधू	+	उल्लास	= वधूल्लास
(ऊ	+	ऊ	= ऊ)	ऋ	+	ऋ	= ॠ
वधू	+	ऊर्मि	= वधूर्मि	पितृ	+	ऋण	= पितॄण

दीर्घ संधि के उदाहरण

1. अन्नाभाव – अन्न + अभाव
2. भोजनालय – भोजन + आलय
3. विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
4. महात्मा – महा + आत्मा
5. गिरीन्द्र – गिरि + इन्द्र
6. महीन्द्र – मही + इन्द्र
7. गिरीश – गिरि + ईश

8. रजनीश	–	रजनी + ईश
9. भानूदय	–	भानु + उदय
10. वधूत्सव	–	वधू + उत्सव
11. रामावतार	–	राम + अवतार
12. सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी
13. रामायण	–	राम + अयन
14. धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म
15. पराधीन	–	पर + अधीन
16. पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष
17. दैत्यारि	–	दैत्य + अरि
18. शताब्दी	–	शत + अब्दी
19. धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ
20. मुरारि	–	मुर + अरि
21. नीलाम्बर	–	नील + अम्बर
22. परमार्थ	–	परम + अर्थ
23. रूद्राक्ष	–	रुद्र + अक्ष
24. स्वाधीन	–	स्व + अधीन
25. गीताजंली	–	गीत + अंजली
26. दीपावली	–	दीप + अवली
27. प्रार्थी	–	प्र + अर्थी
28. छिद्रान्वेषी	–	छिद्र + अन्वेषी
29. मूल्यांकन	–	मूल्य + अंकन
30. अन्त्याक्षरी	–	अंत्य + अक्षरी
31. सापेक्ष	–	स + अपेक्ष
32. अभयारण्य	–	अभय + अरण्य
33. सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी
34. नारायण	–	नार + अयन
35. परमात्मा	–	परम + आत्मा
36. पदावलि	–	पद + अवलि
37. रत्नाकर	–	रत्न + आकर
38. निगमागमन	–	निगम + आगमन
39. पद्माकर	–	पद्म + आकर
40. शरणागत	–	शरण + आगत
41. सत्याग्रह	–	सत्य + आग्रह
42. विद्याध्ययन	–	विद्या + अध्ययन
43. परीक्षार्थी	–	परीक्षा + अर्थी
44. रेखांकित	–	रेखा + अंकित
45. मुक्तावली	–	मुक्ता + अवली
46. दावानल	–	दावा + अनल
47. तथापि	–	तथा + अपि
48. महाशय	–	महा + आशय
49. द्राक्षासव	–	द्राक्षा + आसव
50. विद्यालय	–	विद्या + आलय
51. महात्मा	–	महा + आत्मा
52. प्रेरणास्पद	–	प्रेरणा + आस्पद
53. कवीन्द्र	–	कवि + इन्द्र

54. अतिव – अति + इव
55. अभीष्ट – अभि + इष्ट
56. अतीत – अति + इत
57. महीन्द्र – मही + इन्द्र
58. महतीच्छा – महती + इच्छा
59. कपीश – कपि + ईश
60. प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा
61. अधीक्षण – अधि + इक्षण
62. अभीप्सा – अभि + इप्सा
63. नारीश्वर – नारी + ईश्वर
64. सतीश – सती + ईश
65. लघूत्तम – लघु + उत्तम
66. सूक्ति – सु + उक्ति
67. अनूदित – अनु + उदित
68. गुरूपदेश – गुरु + उपदेश
69. भानूदय – भानु + उदय
70. सिंधूर्मि – सिंधु + ऊर्मि
71. भानूर्जा – भानु + ऊर्जा
72. वधूत्सव – वधू + उत्सव
73. चमूत्तम – चमू + उत्तम
74. मातृण – मातृ + ऋण
75. होतृकार – होतृ + ऋकार

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।
  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।
  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि

उदाहरण

1. गणेश – गण + ईश
2. यथेष्ट – यथा + इष्ट
3. रमेश – रमा + ईश
4. जलोर्मि – जल + ऊर्मि
5. गंगोर्मी – गंगा + ऊर्मि
6. कष्वर्षि – कष्व + ऋषि
7. शुभेच्छा – शुभ + इच्छा
8. नरेश – नर + ईश
9. जलोष्मा – जल + ऊष्मा
10. सप्तर्षि – सप्त + ऋषि
11. नरेन्द्र – नर + इन्द्र
12. भारतेन्दु – भारत + इन्दु
13. मृगेन्द्र – मृग + इन्द्र
14. स्वेच्छा – स्व + इच्छा

15. देवेन्द्र – देव + इन्द्र
16. प्रेषिती – प्र + ईषिती
17. इतरेतर – इतर + इतर
18. अंत्येष्टि – अन्त्य + इष्टि
19. नृपेन्द्र – नृप + इन्द्र
20. महेन्द्र – महा + इन्द्र
21. अपेक्षा – अप + ईक्षा
22. प्रेक्षक – प्र + ईक्षक
23. राकेश – राका + ईश
24. गुड़ाकेश – गुड़ाका + ईश
25. सूर्योदय – सूर्य + उदय
26. सोदाहरण – स + उदाहरण
27. आद्योपान्त – आद्य + उपान्त
28. प्राप्तोदक – प्राप्त + उदक
29. जन्मोत्सव – जन्म + उत्सव
30. अन्योक्ति – अन्य + उक्ति
31. नीलोत्पल – नील + उत्पल
32. परोपकार – पर + उपकार
33. सर्वोदय – सर्व + उदय
34. अन्त्योदय – अन्त्य + उदय
35. महोदय – महा + उदय
36. महोत्सव – महा + उत्सव
37. जलोर्मि – जल + ऊर्मि
38. जलोष्मा – जल + ऊष्मा
39. देवर्षि – देव + ऋषि
40. हेमन्तर्तु – हेमन्त + ऋतु
41. शीतर्तु – शीत + ऋतु
42. शिशिरर्तु – शिशिर + ऋतु
43. उत्तमर्ण – उत्तम + ऋण
44. अधमर्ण – अधम + ऋण
45. राजर्षि – राज + ऋषि
46. महर्ण – महा + ऋण
47. महर्तु – महा + ऋतु
48. तवल्कार – तव + लृकार

नोट

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी। जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ़
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी। जैसे– अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है। जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है। जैसे– महौषधि – महा + औषधि

उदाहरण

1. परमैश्वर्य – परम + ऐश्वर्य
2. सदैव – सदा + एव
3. महैश्वर्य – महा + ऐश्वर्य
4. परमौज – परम + ओज
5. महौजस्वी – महा + ओजस्वी
6. वनौषध – वन + औषध
7. महौषध – महा + औषध
8. लोकैषणा – लोक + एषणा
9. हितैषी – हित + एषी
10. तथैव – तथा + एव
11. वसुधैव – वसुधा + एव
12. सदैव – सदा + एव
13. मतैक्य – मत + ऐक्य
14. विचारैक्य – विचार + ऐक्य
15. गंगौक – गंगा + ओक
16. महौज – महा + ओज
17. जलौषधि – जल + औषधि
18. परमौत्सुक्य – परम + औत्सुक्य
19. देवौदार्य – देव + औदार्य
20. विश्वैक्य – विश्व + ऐक्य
21. स्वैच्छिक – स्व + ऐच्छिक

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो–
  इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।

उदाहरण

1. अत्यधिक – अति + अधिक
2. इत्यादि – इति + आदि
3. नद्यागम – नदी + आगम
4. अत्युत्तम – अति + उत्तम
5. अत्यूष्म – अति + ऊष्म
6. प्रत्येक – प्रति + एक
7. स्वच्छ – सु + अच्छ
8. स्वागत – सु + आगत
9. अन्वेषण – अनु + एषण
10. अन्विति – अनु + इति
11. पित्राज्ञा – पितृ + आज्ञा
12. अत्यल्प – अति + अल्प
13. व्यसन – वि + असन
14. अध्यक्ष – अधि + अक्ष
15. पर्यंक – परि + अंक
16. अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
17. अभ्यंतर – अभि + अंतर
18. व्यय – वि + अय
19. पर्यवेक्षक – परि + अवेक्षक
20. व्यर्थ – वि + अर्थ
21. अत्यन्त – अति + अन्त

22. प्रत्यक्ष – प्रति + अक्ष
23. रीत्यनुसार – रीति + अनुसार
24. व्यवहार – वि + अवहार
25. न्यस्त – नि + अस्त
26. अध्ययन – अधि + अयन
27. प्रत्यय – प्रति + अय
28. गत्यवरोध – गति + अवरोध
29. गत्यनुसार – गति + अनुसार
30. व्यष्टि – वि + अष्टि
31. प्रर्त्यपण – प्रति + अर्पण
32. अभ्यागत – अभि + आगत
33. प्रत्याशा – प्रति + आशा
34. अत्याचार – अति + आचार
35. व्याकुल – वि + आकुल
36. अभ्यास – अभि + आस
37. अत्यावश्यक – अति + आवश्यक
38. व्यापक – वि + आपक
39. पर्याप्त – परि + आप्त
40. पर्यावरण – परि + आवरण
41. अध्यादेश – अधि + आदेश
42. व्यास – वि + आस
43. व्याप्त – वि + आप्त
44. न्याय – नि + आय
45. व्याकरण – वि + आकरण
46. व्यायाम – वि + आयाम
47. व्याधि – वि + आधि
48. प्रत्यारोपण – प्रति + आरोपण
49. अभ्युदय – अभि + उदय
50. प्रत्युत्तर – प्रति + उत्तर
51. उपर्युक्त – उपरि + उक्त
52. प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
53. न्यून – नि + ऊन
54. अत्यैश्वर्य – अति + ऐश्वर्य
55. देव्यपर्ण – देवी + अर्पण
56. नद्यपर्ण – नदी + अर्पण
57. देव्यागमन – देवी + आगमन
58. नार्युचित – नारी + उचित
59. स्त्र्युचित – स्त्री + उचित
60. स्त्र्युपयोगी – स्त्री + उपयोगी
61. नद्युर्मि – नदी + ऊर्मि
62. अत्यौचित्य – अति + औचित्य
63. स्वल्प – सु + अल्प
64. मन्वन्तर – मनु + अन्तर
65. स्वच्छ – सु + अच्छ
66. मध्वरि – मधु + अरि
67. तन्वंगी – तनु + अंगि
68. स्वस्ति – सु + अस्ति
69. गुर्वादेश – गुरु + आदेश
70. गुर्वाज्ञा – गुरु + आज्ञा

71. वध्वागमन – वधू + आगमन
72. अन्विति – अनु + इति
73. अन्वीक्षण – अनु + ईक्षण
74. अन्वीक्षा – अनु + ईक्षा
75. गुर्वेदार्य – गुरु + औदार्य
76. पित्रनुमति – पितृ + अनुमति
77. मात्राज्ञा – मातृ + आज्ञा
78. पित्रादेश – पितृ + आदेश
79. वक्त्रुद्बोधन – वक्तृ + उद्बोधन
80. लाकृति – लृ + आकृति
81. सुध्युपास्य – सुधी + उपास्य
82. त्र्यम्बकम – त्रि + अम्बकम
83. स्वस्त्ययन – स्वस्ति + अयन

(v) अयादि संधि

- यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय्, ऐ का आय् हो जाता है।
  जैसे– नयन – ने + अन
  नायक – नै + अक
- ओ का अव, औ का आव हो जाता है।
  जैसे– पवन–पो + अन
  पावक–पौ + अक

उदाहरण

1. भवन – भो + अन
2. संचय – संचे + अ
3. शयन – शे + अन
4. नय – ने + अ
5. विजयिनी – विजे + इनी
6. विनायक – विनै + अक
7. विधायिका – विद्यै + इका
8. पायक – पै + अक
9. गायक – गै + अक
10. विधायक – विधै + अक
11. सायक – सै + अक
12. हवन – हो + अन
13. गवीश – गो + ईश
14. श्रवण – श्रो + अन
15. विभव – विभो + अ
16. भविष्य – भो + इष्य
17. पवित्र – पो + इत्र
18. वटवृक्ष – वटो + वृक्ष
19. श्रावक – श्रौ + अक
20. धाविका – धौ + इका

नोट – कुछ शब्द ऐसे होते है जिसमें एक से अधिक संधि भी होती है।
गवेन्द्र– गो + इन्द्र – अयादि
गव + इन्द्र – गुण
गवाक्ष – गो + अक्ष – अयादि
गव + अक्ष – गुण

निबंध लेखन

4 CHAPTER भारत में शिक्षा

प्रसिद्ध हस्तियों द्वारा उद्धरण

- **नेल्सन मंडेला** -शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।
- **अरस्तू** - किसी विचार को स्वीकार किए बिना उस पर ध्यान देने में सक्षम होना एक शिक्षित दिमाग की निशानी है।
- **थियोडोर रूजवेल्ट** - एक व्यक्ति को नैतिकता में शिक्षित न करके, केवल दिमाग से करना समाज के लिए खतरा है।
- **मार्गरिट मीड** - "बच्चों को यह सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचना है, न कि क्या सोचना है"।
- **विवेकानंद** - "हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं, जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो, और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके"।
- **विवेकानंद** - "कार्य के बिना ज्ञान बेकार है"।
- **विवेकानंद** - "एक राष्ट्र उसी अनुपात में उन्नत होता है जिस अनुपात में शिक्षा और बुद्धि जनता के बीच फैलती है"।
- **विवेकानंद** - उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।
- **भगत सिंह** - अध्ययन करें ताकि आप अपने विरोधियों के तर्कों का उत्तर दे सकें।
- **मलाला युसुफजई** - बंदूक से आप आतंकवादी को मार सकते हैं लेकिन शिक्षा से आप आतंकवाद को मार सकते हैं।
- **सैयद अहमद खान** - जब कोई राष्ट्र कला और शिक्षा से रहित हो जाता है तो वह गरीबी को आमंत्रित करता है। जब गरीबी आती है तो हजारों गुनाहों को जन्म देती है।

भारत में शिक्षा का इतिहास

- भारत में प्राचीन भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ज्ञान को प्रसारित करने का एक लंबा इतिहास रहा है जिसमें शिष्य (छात्र) उसी घर में रहते थे जहां गुरु रहते थे। नालंदा विश्व की पहली विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली होने के कारण इसमें दुनिया भर के छात्र थे।
- ज्ञान प्रणाली की कई शाखाओं की उत्पत्ति भारत में हुई। प्राचीन भारत में शिक्षा को श्रेष्ठ गुण माना जाता था।
- हालाँकि, उस समय यूरोप में जो पुनर्जागरण और वैज्ञानिक विचार हुआ वह भारत में नहीं हुआ। उस समय तक, अंग्रेजों ने भारतीय मामलों पर नियंत्रण कर लिया था और उनके मन में विशिष्ट लक्ष्य थे। अंग्रेजों ने देश में पिछली शिक्षा प्रणालियों को अंग्रेजी-आधारित विधियों से बदल दिया। बहरहाल, भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार की सख्त जरूरत है।

शिक्षा से संबंधित आयोग और समितियां

- **ब्रिटिश सरकार** ने भारत में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत की थी। मैकॉले मिनट से लेकर वुड़ डिस्पैच से लेकर सैडलर कमीशन, 1904 भारतीय शिक्षा नीति आदि जैसे कई आयोगों ने औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली की नींव रखी।
- **राधाकृष्णन समिति (1948-49):** इसने स्वतंत्र भारत की जरूरतों के आधार पर शिक्षा प्रणाली को ढाला।
- **कोठारी आयोग**: राधाकृष्णन समिति द्वारा अनुशंसित शिक्षा प्रणाली का बुनियादी ढांचा प्रदान किया।

<u>ढांचे की बुनियादी विशेषताएं</u>

- 10+2+3 पैटर्न।
- सामाजिक या धार्मिक अलगाव के बिना पड़ोस की स्कूल प्रणाली और शिक्षा के प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों को एकीकृत करने वाली एक स्कूल प्रणाली।
- भारतीय शिक्षा सेवा की स्थापना।

त्रिभाषा सूत्र

राज्य सरकारों को हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी और अंग्रेजी के अलावा एक आधुनिक भारतीय भाषा, अधिमानतः दक्षिणी भाषाओं में से एक, और गैर-हिंदी भाषी राज्यों में क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी के साथ हिंदी के अध्ययन को लागू करना चाहिए। सभी भारतीयों के लिए एक समान भाषा को बढ़ावा देने के लिए हिंदी को समान रूप से प्रोत्साहित किया गया।

टी.एस.आर. सुब्रमण्यम समिति की रिपोर्ट

- 4-5 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित किया जाए।
- परीक्षा प्रणाली में सुधार : नो डिटेंशन की नीति को केवल पांचवीं कक्षा तक और आठवीं कक्षा तक ही कायम रखा जाना चाहिए।
- शिक्षा में आईसीटी: सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और शिक्षा क्षेत्र का अपर्याप्त एकीकरण हुआ है।
- व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण: व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का चुनाव स्थानीय अवसरों और संसाधनों के अनुरूप होना चाहिए।
- व्यावसायिक शिक्षा के लिए औपचारिक प्रमाणन को पारंपरिक शिक्षा प्रमाणपत्रों के समकक्ष लाना।
- अखिल भारतीय शिक्षा सेवा।

- राष्ट्रीय उच्च शिक्षा संवर्धन और प्रबंधन अधिनियम (एनएचईपीएमए): उच्च शिक्षा में व्यक्तिगत नियामकों को नियंत्रित करने वाले मौजूदा अलग कानूनों को बदलने के लिए।
- यूजीसी और एआईसीटीई जैसे मौजूदा नियामक निकायों की भूमिका को संशोधित किया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबी) मौजूदा प्रत्यायन निकायों को समाहित करता है।

स्कूली शिक्षा पर कस्तूरीरंगन रिपोर्ट (राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा):

- उद्देश्य: भारत में शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन और एक नई शिक्षा नीति तैयार करना जो चौथी औद्योगिक क्रांति में अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करके भारतीयों की जरूरतों को पूरा करेगी।

संविधान और शिक्षा

मौलिक अधिकार

- अनुच्छेद 21A: शिक्षा का अधिकार
- अनुच्छेद 28: कुछ शिक्षण संस्थानों में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक पूजा में उपस्थिति के बारे में स्वतंत्रता।
- अनुच्छेद 29: शैक्षणिक संस्थानों में अवसर की समानता।
- अनुच्छेद 30: अल्पसंख्यकों को शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और प्रशासन का अधिकार।

निदेशक सिद्धांत

- अनुच्छेद 41: कुछ मामलों में काम, शिक्षा और सार्वजनिक सहायता का अधिकार।
- अनुच्छेद 46: यह अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और समाज के कमजोर वर्गों की शिक्षा और आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के लिए विशेष देखभाल प्रदान करता है।
- अनुच्छेद 45: सरकार को संविधान लागू होने के 10 साल के भीतर 14 साल तक के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देनी चाहिए। संविधान से वांछित उद्देश्य प्राप्त नहीं हुआ जिसके कारण अनुच्छेद 21A की शुरूआत हुई।
- 86वां संविधान संशोधन अधिनियम: अनुच्छेद 21A जोड़ा गया जिसने प्रारंभिक शिक्षा को एक निदेशक सिद्धांत के बजाय एक मौलिक अधिकार बना दिया।
- अनुच्छेद 45 में छह साल से कम उम्र के बच्चों को प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा प्रदान करने के लिए संशोधन किया गया था।
- सर्व शिक्षा अभियान: RTE अधिनियम के तहत परियोजना पूरे देश में अनुच्छेद 21ए को लागू करने के लिए है।
- उद्देश्य: समयबद्ध तरीके से प्रारंभिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण (UEE) प्रदान करना।

विभिन्न स्तरों पर शिक्षा

स्तर:

- प्राथमिक शिक्षा

चुनौतियां:

- अवसंरचनात्मक कमी
- उच्च स्तर का भ्रष्टाचार और रिसाव
- शिक्षकों की गुणवत्ता
- शिक्षकों पर गैर-शैक्षणिक बोझ
- शिक्षकों का कम वेतन
- उत्तरदायित्व की कमी
- उच्च ड्रॉप आउट दर (विद्यालय छोड़ने की उच्च दर)
- छात्रों की कमी के कारण स्कूल बंद

उपाय / कार्यक्रम:

- सर्व शिक्षा अभियान
- मध्याह्न भोजन
- महिला समाख्या
- मदरसों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए सुदृढ़ीकरण (SPQEM)
- शिक्षकों को केवल पढ़ाने के लिए होना चाहिए
- शिक्षकों और छात्रों दोनों की उपस्थिति का डिजिटलीकरण

स्तर:

- माध्यमिक शिक्षा

चुनौतियां:

- ज्यादातर प्राथमिक शिक्षा के समान

उपाय / कार्यक्रम:

- राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
- बालिका छात्रावास योजना
- माध्यमिक शिक्षा के लिए लड़कियों को प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना
- माध्यमिक स्तर पर दिव्यांगों के लिए समावेशी शिक्षा
- व्यावसायिक शिक्षा की योजना
- राष्ट्रीय योग्यता-सह-साधन छात्रवृत्ति योजना
- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं के लिए बालिका छात्रावास के निर्माण एवं संचालन की योजना
- अल्पसंख्यक छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजनाएं
- राष्ट्रीय छात्रवृत्ति

स्तर:

- उच्च शिक्षा

चुनौतियां:

- अनुसंधान और छात्रवृत्ति की उपेक्षा की गई है
- विशिष्ट स्तर के लिए निधियों का कम आवंटन
- कम नामांकन अनुपात
- एकल नियामक की कमी
- स्वायत्तता का अभाव

उपाय / कार्यक्रम:

- विभिन्न नियामकों के बीच प्रभावी समन्वय होना चाहिए
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक अधिक पहुंच
- गुणवत्ता और प्रासंगिक शिक्षा का बीमा

पहल:

- शिक्षुता प्रशिक्षण योजना
- राष्ट्रीय छात्रवृत्ति
- पोस्ट-डॉक्टोरल रिसर्च फेलो (योजना)
- तकनीकी शिक्षा छात्रवृत्ति के लिए अखिल भारतीय परिषद
- दिव्यांग व्यक्तियों का सशक्तिकरण - योजनाएं/कार्यक्रम
- अल्पसंख्यक/आदिवासी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति।

भारत में शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं और अभियान

- **सर्व शिक्षा अभियान:** 2001 में 'सभी के लिए शिक्षा' को बढ़ावा देने, स्कूलों के मौजूदा बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और नए स्कूलों के निर्माण के उद्देश्य से शुरू किया गया।
- **प्रारंभिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम:** "सबसे कठिन" लड़कियों तक पहुँचने के लिए एक केंद्रित हस्तक्षेप, विशेष रूप से जो स्कूल में नहीं हैं।
- **मध्याह्न भोजन योजना:** यह एक भोजन है जो सर्व शिक्षा अभियान (SSA) के तहत समर्थित सरकारी स्कूलों, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों, स्थानीय निकाय स्कूलों, विशेष प्रशिक्षण केंद्रों (STC), मदरसों और मस्तबाओं में नामांकित सभी बच्चों को प्रदान किया जाता है।
- **राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान:** प्रत्येक घर से उचित दूरी के भीतर माध्यमिक विद्यालय प्रदान करके माध्यमिक शिक्षा को बढ़ाने और नामांकन दर में वृद्धि करने का लक्ष्य।
- **अल्पसंख्यक संस्थानों में अवसंरचनाओं के विकास के लिए योजना:** अल्पसंख्यक संस्थानों में स्कूल के अवसंरचनाओं को बढ़ाने और मजबूत करने के द्वारा अल्पसंख्यकों की शिक्षा की सुविधा।
- **बेटी बचाओ बेटी पढाओ:** भारत में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के साथ चुनौतियां

- **सरकारी स्कूलों/संस्थानों में गुणवत्ता और मानकों की कमी:** हमारे स्कूलों और संस्थानों में प्रभावी शिक्षकों की कमी, वर्तमान निर्देशात्मक वितरण तकनीकों और खराब सीखने की परिस्थितियों के कारण माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के लिए निजी स्कूलों का चयन कर रहे हैं।
- **पुराने निदेशात्मक वितरण :** भारत की शिक्षा प्रणाली में, अप्रचलित शैक्षिक वितरण तकनीकों के मुद्दे भी हैं। पारंपरिक प्रक्रियाएं और रटना बच्चों को प्रभावी रूप से रुचि नहीं देती हैं।
- **समग्र विकास पर कम ध्यान:** कौशल-निर्माण और पाठ्येतर गतिविधियों में कमियों के कारण हमारे बच्चों में मौलिक क्षमताओं और आउट-ऑफ-द-बॉक्स सोच की कमी है। छात्रों को अंततः पाठ्यक्रम, निर्देशात्मक वितरण और प्रभावों के कारण अपने परीक्षण स्कोर में सुधार करने के लिए क्रैमिंग रणनीतियों को अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है।
- **छात्रों के लिए उच्च शैक्षणिक दबाव और तनाव:** भारतीय छात्रों की शैक्षिक सफलता अकादमिक चिंता और सामाजिक दबाव से बाधित होती है। यह आत्महत्या और मानसिक बीमारियों जैसे महत्वपूर्ण नुकसान में भी योगदान देता है। आंकड़ों के मुताबिक 2018 में 10,159 छात्रों ने आत्महत्या की।
- **परीक्षा प्रणालियाँ अंक-केंद्रित हैं:** बच्चों की रचनात्मकता को प्रदर्शित करने के अवसर के अभाव में वर्ष के अंत में आवश्यक परिणाम प्राप्त करने के लिए आजमाई और परखी हुई प्रथाओं पर टिके रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है। अंतत: अपनी सहज क्षमता के बावजूद पिछड़ने के लिए विवश।

ऑनलाइन शिक्षा

कोरोनावायरस महामारी के कारण शिक्षा क्षेत्र इस समय संकट में है। कोविड -19 मामलों की बढ़ती संख्या के कारण, हाल ही में शैक्षणिक संस्थान बंद कर दिए गए थे।

इस स्थिति में, ऑनलाइन शिक्षा शैक्षिक कारण की सहायता के लिए आई है। हालाँकि, ऑनलाइन शिक्षा के साथ कई मुद्दे हैं जिन्हें संबोधित किया जाना चाहिए।

ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां

- **उचित अध्ययन कक्ष का अभाव:** तीन या अधिक सदस्यों वाले 71 प्रतिशत परिवारों के पास दो या उससे कम कमरे वाले आवास हैं, ऐसे में बच्चे अशांत वातावरण में शिक्षा कैसे प्राप्त करेंगे यह एक बड़ा प्रश्न बना हुआ है।
- **अपर्याप्त इंटरनेट सुविधा:** jio क्रांति के बाद भी 2/3 बच्चों के पास इंटरनेट तक पहुंच नहीं है। सबसे बुरी तरह प्रभावित, हमेशा की तरह, हाशिए पर रहने वाली, ग्रामीण और गरीब आबादी होगी।
- **धीमी इंटरनेट गति:** वीडियो कॉल के माध्यम से शिक्षकों के साथ सीधे संवाद करते समय या ऑनलाइन वीडियो व्याख्यान देखते समय, और दोनों को स्थिर इंटरनेट कनेक्शन के साथ उच्च गति की आवश्यकता होती है।

- **मानक नीति का अभाव:** हमारे पास डिजिटल शिक्षा, बुनियादी ढांचे, सामग्री, अंतःक्रिया और कई भाषाओं पर उचित नीति का अभाव है।
- **शिक्षकों का प्रशिक्षण:** ऑनलाइन माध्यमों से इन शिक्षाओं को विकसित करने के लिए शिक्षकों को पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित नहीं किया जाता है।

ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने की पहल

- **स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स (SWAYAM):** ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की पेशकश और स्कूल (9वीं से 12वीं) को स्नातकोत्तर स्तर तक कवर करने के लिए एकीकृत मंच।
- **SWAYAM प्रभा:** 24X7 आधार पर देश भर में DTH (डायरेक्ट टू होम) के माध्यम से 32 उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चैनल प्रदान करने की पहल।
- **नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी (NDL):** सिंगल-विंडो सर्च सुविधा के साथ सीखने के संसाधनों के वर्चुअल रिपोजिटरी के ढांचे को विकसित करने के लिए एक परियोजना।
- **शिक्षा के लिए मुक्त स्रोत सॉफ्टवेयर (FOSSEE):** शैक्षिक संस्थानों में ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग को बढ़ावा देने वाली एक परियोजना।
- **ई-यंत्र:** भारत में इंजीनियरिंग कॉलेजों में एम्बेडेड सिस्टम और रोबोटिक्स पर प्रभावी शिक्षा को सक्षम करना।

ऑनलाइन शिक्षा का महत्व:

- **लागत-प्रभावशीलता:** यदि ऑनलाइन शिक्षा एक आदर्श बन जाती है, तो निस्संदेह कई लाभ हैं, जिनमें लागत-प्रभावशीलता भी शामिल है।
- **सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा**: जो छात्र अभी तक सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक कारणों से विदेशों से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते थे, वे भी अब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।
- **सभी तक पहुंच:** सामाजिक और भौतिक दोनों सीमाओं और बाधाओं को समाप्त करता है। ऑनलाइन पाठ्यक्रम उन चुनौतियों का एक बड़ा समाधान हैं जिनका सामना ये लोग करते हैं क्योंकि उन्हें उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और उनके अपने स्थान और समय पर प्रदान की जाती है।
- **एक विस्तृत क्षेत्र**: रोजगार में वृद्धि में मदद करेगा क्योंकि कुशल प्रशिक्षक और शिक्षक अपनी पहुंच का विस्तार कर सकते हैं। भारत में छात्र दुनिया के शीर्ष पायदान के प्रोफेसरों और प्रशिक्षकों द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
- **अद्यतन ज्ञान:** पेशेवरों को एक साथ काम करते हुए अपने कौशल स्तर में सुधार और अद्यतन करने के लिए लचीलापन प्रदान करता है। इससे उन्हें मौजूदा प्रगति और प्रौद्योगिकियों के बारे में अद्यतन रहने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष

- ऑनलाइन शिक्षा भारत और दुनिया में शिक्षा परिदृश्य को बदलने के लिए पूरी तरह तैयार है। हालांकि, इस क्षेत्र में नवाचार का लाभ उठाने के लिए शिक्षाशास्त्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता होगी।

व्यावसायिक शिक्षा

- शिक्षा जो व्यवसाय और रोजगार पर केंद्रित है।
- कैरियर और तकनीकी शिक्षा (CTE), तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (TVET) के रूप में भी जाना जाता है।
- NCVT I.T.I. मान्यता प्रदान करने के लिए नोडल एजेंसी है।

<u>व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्य</u>

- मांग-संचालित योग्यता-आधारित मॉड्यूलर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से युवाओं की रोजगार क्षमता में सुधार करना।
- योग्यता में बहु-प्रवेश, बहु-निकास सीखने के अवसर, साथ ही ऊर्ध्वाधर गतिशीलता/विनिमेयता प्रदान करके प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखना।
- शिक्षित होने और रोजगार योग्य होने के बीच की खाई को पाटना।
- माध्यमिक विद्यालय छोड़ने की दर को कम करना।

<u>भारत में व्यावसायिक शिक्षा के साथ चुनौतियां</u>

- माध्यमिक विद्यालय छोड़ने की दर अधिक है।
- कौशल के अधिग्रहण के बाद ऊर्ध्वाधर गतिशीलता सीमित है।
- नियोक्ता केवल व्यावसायिक कौशल के बजाय मजबूत बुनियादी शैक्षणिक कौशल वाले युवा श्रमिकों को पसंद करते हैं।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी का अभाव।
- निरंतर कौशल विकास का अभाव।
- व्यावसायिक कौशल में छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए अनुभवी और योग्य शिक्षक अपर्याप्त हैं।
- अधिकांश समय, खराब प्रशिक्षण गुणवत्ता उद्योग की जरूरतों के अनुरूप नहीं होती है।

<u>व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की पहल</u>

- राष्ट्रीय व्यावसायिक योग्यता ढांचा" (NVQF): कौशल विकास में सुधारों को प्रोत्साहित करने और समर्थन करने के लिए और राष्ट्रीय स्तर पर मानकीकृत और स्वीकार्य, योग्यता की अंतरराष्ट्रीय तुलना को सुविधाजनक बनाने के लिए।
- राष्ट्रीय कौशल विकास निगम भारत (NSDC): बड़े, गुणवत्तापूर्ण, लाभकारी व्यावसायिक संस्थानों के निर्माण को उत्प्रेरित करके कौशल विकास को बढ़ावा देना।

- युवाओं की व्यावसायिक उन्नति के लिए कौशल मूल्यांकन मैट्रिक्स (SAMVAY): शिक्षा से कौशल तक निर्बाध आवाजाही प्रदान करना।
- पीएम कौशल विकास योजना (PMKVY): तकनीकी संस्थानों की सुविधा का उपयोग करके बेरोजगार युवाओं को इंजीनियरिंग कौशल में कुशल बनाने की एक योजना।
- ग्राम तरंग: आदिवासी/नक्सल प्रभावित क्षेत्रों को लक्षित करना। ऑटो सीएडी में लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण केंद्र बनाए गए, ऑटोकाड द्वारा वित्त पोषित उन्नत मशीनरी पर उन्नत वेल्डिंग।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

- NEP कस्तूरीरंगन और TSR सुब्रमण्यम समितियों की सिफारिशों पर आधारित है।

NEP के प्रमुख प्रावधान और महत्वः

प्रावधान

<u>स्कूली शिक्षा</u>

- 2030 तक 100% जीईआर (सकल नामांकन अनुपात) के माध्यम से प्राथमिक से माध्यमिक तक शिक्षा का सार्वभौमिकरण करना।
- स्कूल से बाहर के बच्चों के लिए ओपन स्कूलिंग सिस्टम (NIOS जैसी कोई प्रवेश आवश्यकता नहीं)।
- मौजूदा 10+2 प्रणाली की जगह 5+3+3+4 पाठ्यक्रम प्रणाली।
- बिना किसी भाषा को थोपे कक्षा 5 तक मातृभाषा में अध्यापन।
- त्रिभाषा सूत्र: राज्यों को भाषा तय करने की स्वतंत्रता होगी।
- सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों से संबंधित महत्वपूर्ण आबादी वाले क्षेत्रों में विशेष शैक्षिक क्षेत्र (SEZ): विशेष ध्यान, अतिरिक्त संसाधन।

<u>उच्च शिक्षा</u>

- एक लचीले पाठ्यक्रम के प्रावधानों के साथ व्यापक-आधारित, बहु-अनुशासनात्मक, समग्र यूजी (स्नातक) शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण, कई प्रविष्टियां, और संबंधित डिग्री के साथ कई निकास बिंदु।
- क्षेत्रीय भाषाओं में स्नातक कार्यक्रम।
- संस्थानों के बीच क्रेडिट के हस्तांतरण को सक्षम करने के लिए क्रेडिट का अकादमिक बैंक
- कानूनी और चिकित्सा शिक्षा को छोड़कर HECI (भारत का उच्च शिक्षा आयोग) एकछत्र नियामक के रूप में।
- स्कूलों और कॉलेजों में बहुभाषावाद को बढ़ावा देना।
- विदेशी विश्वविद्यालय भारत में कैंपस स्थापित कर सकते हैं।

महत्व

- 5+3+3+4 संरचना के माध्यम से बच्चे के भविष्य में पूर्वस्कूली शिक्षा का महत्व।
- कक्षा 5 तक मातृभाषा का महत्व, जिसका प्रभाव बच्चे के सीखने के परिणामों पर पड़ता है।
- लैंगिक समानता और वंचित समूहों पर ध्यान केंद्रित करने से कोई भी बच्चा पीछे नहीं रहा। जेंडर इनक्लूजन फंड और स्पेशल एजुकेशन जोन इसमें मदद करते हैं।
- लंबे समय से उपेक्षित भारतीय भाषाओं और ज्ञान प्रणालियों पर ध्यान।
- (आदिवासी आदि) सांस्कृतिक और वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाएंगे।
- रोजगारपरकता बढ़ाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा।
- उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग।

नई शिक्षा नीति को लागू करने में चुनौतियां

- सभी राज्यों को पटल पर लाना: जैसे तमिलनाडु में त्रिभाषा फार्मूले के कार्यान्वयन से संबंधित आरक्षण हैं।
- अपर्याप्त अवसंरचनाएं और फंडिंग की जरूरत: 2035 तक सकल नामांकन अनुपात को दोगुना करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा के अवसंरचनाओं में सुधार के लिए कहीं अधिक और तेज निवेश की आवश्यकता होगी।
- शिक्षकों का कौशल विकास: शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण शिक्षण विधियों और पद्धतियों में भी कुशल होने की आवश्यकता है। UDISE 2019-20 के अनुसार, भारत में चार में से केवल एक शिक्षक को शिक्षण के लिए कंप्यूटर का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था।
- शिक्षा के व्यावसायीकरण और निजीकरण का खतरा: निजी खिलाड़ियों को बढ़ावा देना और विदेशी विश्वविद्यालयों को अनुमति देना समाज में मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकता है